व्याकुल राष्ट्र की प्रशंसा में

"व्याकुल राष्ट्र खूबसूरती से किया गया एक नियंत्रित कार्य है। सह प्रभावशाली और विद्वतापूर्ण भी है। इसका रचना में साहित्य और दृश्य कला से लेकर व्यापार और राजनय के असाधारण प्रमाण सम्मिलित किए गए है। नस्ल के प्रति एक संतुलित दृष्टिकोण के कारण यह कृति विशेष रूप से असरदार हो गई है। ?..."

– 2001 के अर्नेस्ट स्कॉट पुरस्कार के उद्धरण से

"एशिया के आस्ट्रेलियाई प्रतिनिधित्व पर व्याकुल राष्ट्र से बेहतर कोई अन्य इतना शोधपरक मूल्यांकन उपलब्ध नहीं है। एशिया के छोर पर टिके हुए उपनिवेशी समाज पर केन्द्रित इस विद्वतापूर्ण और विवेक पूर्ण पुस्तक को ऐसी स्थिति में पढ़ना और भी जरूरी हो जाता है। जब भारत आस्ट्रेलिया के लिए एक ग्रंथि पाले हुए है कि वह एशिया के प्रति अक्सर चिन्ता जनक प्रतिक्रिया देता है।"

– दीपेश चक्रवर्ती, इतिहास और दक्षिण एशियाई अध्ययन,
के लारेंस ए किपटन डिसटिंग्विस्ड सर्विस प्रोफेसर, शिकागो विश्वविद्यालय

"उस हर व्यक्ति को डेविड वॉकर की यह पुस्तक पढ़नी चाहिए जो एशिया के साथ आस्ट्रेलिया के रिश्तों पर टिप्पणी का अवलोकन करते है या जो आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय अनुभव को समझना चाहते हैं।"

– दी इंटरनेशनल हिस्ट्री रिव्यु

"एशिया की बहुलताजनित ऐतिहासिक विमर्श को केंद्र में रखते हुए वॉकर ने उनसे हमारे संबंधों पर एक गभीर चर्चा को समग्रता में दुनिया के सामने रखा है।"

– यूरेका स्ट्रीट

"यह पुस्तक उन दुर्लभ अकादमिक उत्पादों में से एक है समावेशी भौली में बौद्धिक चुनौती और उत्कृष्ट शोध के संयोग को फलीभूत करती है। वॉकर ने आस्ट्रेलिया के विकसित हो रहे सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण को एशिया के उद्भव के अनेक परतों से जोडकर देखा है।"

– एशियन स्टडीज रिव्यु

"व्याकुल राष्ट्र आस्ट्रेलियाई अध्ययन और एशिया के मध्य सवांद का एक विस्तृत तथा रोचक संयोग हैं। यह एक ऐसे प्रवेश द्वार के समान है जिसके अंदर आस्ट्रेलिया और एशिया के संवाद सांस्कृति प्रभावों सहित अनेक अन्य पहलुओं पर चर्चा की गई है।"

– दि एज

"...इतिहास विज्ञान और साहित्य के संदर्भ में वाकॅर ने आस्ट्रेलिया के एशिया के साथ यथार्थ और काल्पनिक द्वंद्व को भी दर्शाया है।...यह विचारों और दुरभिसंधियों के एक खोजी इतिहास के रूप में है जो रक्त गर्मी सूर्य संवेदना सेक्स और सपनों के राजनैतिक व साहित्यिक आयामों को रेखांकित करता है।..."

– टॉम ग्रिफिथ्स, इतिहास कार्यक्रम,
रिसर्च स्कूल ऑफ सोशल साइसेंज, आस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय

यह पुस्तक भारतीय पाठकों के सम्मुख आस्ट्रेलिया राष्ट्र के निर्माण की तस्वीर रखती है, साथ ही एशिया के साथ उसके अटपटे और संवेदनशील संबंधो को भी रेखांकित करती है। यह हिन्दी अनुवाद आस्ट्रेलिया एवं भारत के संबंधों को समझने में शिक्षकों एवं छात्रों की सहायता करेगा।

– अनुवादक

₹ 1495.00
ISBN: 978-81-7844-295-2
K. K. PUBLICATIONS
4806/24, Bharat Ram Road, Darya Ganj,
New Delhi - 110 002.

व्याकुल राष्ट्र

डेविड वॉकर

व्याकुल राष्ट्र

अर्नेस्ट स्कॉट पुरस्कार विजेता पुस्तक

डेविड वॉकर

व्याकुल राष्ट्र

आस्ट्रेलिया एवं एशिया का उदय, 1850-1939

अनुवादक

अमित सारवाल, रीमा सारवाल, मनीश मोहन गोरे,

व्याकुल राष्ट्र

अर्नेस्ट स्कॉट पुरस्कार विजेता पुस्तक

डेविड वॉकर

व्याकुल राष्ट्र

(आस्ट्रेलिया एवं एशिया का उदय, 1850-1939)

अनुवादक

अमित सारवाल रीमा सारवाल
मनीश मोहन गोरे सौरभ निरुपम
एवं नवनीत कुमार त्रिपाठी

के. के. पब्लिकेशन्स

प्रस्तुत पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्ण रूप से लेखक के अपने हैं इनसे प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं किसी भी प्रकार से इन विचारों का पूर्ण दायित्व लेखक का है। इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन:प्रयोग द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

व्याकुल राष्ट्र : आस्ट्रेलिया एवं एशिया का उदय, 1850–1939
अनु. अमित सारवाल, रीमा सारवाल, मनीश मोहन गोरे,
सौरभ निरुपम एवं नवनीत कुमार त्रिपाठी

© : डेविड वॉकर

प्रथम संस्करण : 2017

ISBN : 978-81-7844-295-2

मूल्य : ₹ 1495.00

प्रकाशक : **के.के. पब्लिकेशन्स**
4806/24, भरतराम रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
फोन : 011-23285167, 65185557, 64527574
टेलीफैक्स : 011-47340207
ई-मेल : kkpdevinder@vsnl.net
वेब : www.kkpublications.com

आवरण : कुमार कम्प्यूटर, दिल्ली - 33

लेज़र टाईपसैटिंग : कुमार कम्प्यूटर, दिल्ली - 03

मुद्रक : बालाजी ऑफसेट, दिल्ली - 32

Vyakul Rashtra : Australia evam Asia ka Uday, 1850–1939
Trans. Amit Sarwal, Reema Sarwal, Manish Mohan Gore,

प्राक्कथन एवं आभार

2009 में *व्याकुल राष्ट्र* का भारतीय संस्करण आना एक बड़ी खुशी की बात थी। आस्ट्रेलियाई इतिहास, संस्कृति, साहित्य और कला के लिए भारत में रूचि बढ़ रही है तथा आस्ट्रेलियाई अध्ययन में शोध पत्रों और सहभागियों के दायरे भी बढ़ रहे हैं। यद्यपि कुछ क्षेत्रों में नासमझी और असहमति के कारण दोनों देशों के बीच के आर्थिक बंधन कभी मजबूत नही हो पाए थे। भारतीय विद्यार्थियों पर आस्ट्रेलिया में हुए ताज़ा हमलों की भारत में बहुत भर्त्सना हुई थी। इस दोषारोप की पुनप्रतिष्ठा हुई है कि आस्ट्रेलिया एक नस्ली समाज है। दोनों ही समाजों के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे एक गहरा पारस्परिक जागरूकता विकसित करते है और लाभ का ज्ञान बांटते हैं। हमें एक–दूसरे की ज़रूरत है, *व्याकुल राष्ट्र* मध्य–उन्नीसवीं सदी से द्वितीय विश्व युद्ध के आरंभिक काल तक भारत सहित एशिया में आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधित्व का एक स्पष्ट और विस्तृत इतिहास प्रकट करता है। इस प्रस्तुतीकरण में, यह पुस्तक आस्ट्रेलिया के निर्माण के सम्यक विवरण से भारतीय पाठकों को रू–ब–रू कराती हैं, यह ब्यौरा एशिया के साथ के अटपटे और संवेदनशील रिश्तों से अलग भी बात करता है। *व्याकुल राष्ट्र* पहली बार 1999 में क्वींसलैंड विश्वविद्यालय प्रेस द्वारा प्रकाशित हुई थी। इस सी. एल. एस. श्रृंखला एस. एस. एस. प्रकाशन संस्करण में कोई महत्त्वपुर्ण परिवर्तन नहीं किए गए हैं।

व्याकुल राष्ट्र के पहले प्रकाशन, 1999, पर मुझे अनेक भारतीय विद्वानों की ओर से तीक्ष्ण प्रतिक्रियाएं मिली हैं। मुझे जिन लोगों ने सहयोग दिया है उन सबका उल्लेख करने में मैं असमर्थ हूं, फिर भी मैं दिपेश चक्रवर्ती, आशीश नंदी, आर. नारायण, संतोष के. सरीन, देब नारायण बंदोपाध्याय, नीलांजन देव, याग्मा रेड्डी, दर्वेश गोपाल, देवराम नारखेडे, गीताली देवरी, सरोज रथ, अमित सारवाल और रीमा सारवाल को धन्यवाद देना चाहूंगा। एशिया–पेसिफिक क्षेत्र पर आस्ट्रेलियाई संबंधों के दिलचस्प विषय में हीकिन विश्वविद्यालय

प्रस्तुत पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्ण रूप से लेखक के अपने हैं इनसे प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं किसी भी प्रकार से इन विचारों का पूर्ण दायित्व लेखक का है। इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन:प्रयोग द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

व्याकुल राष्ट्र : आस्ट्रेलिया एवं एशिया का उदय, 1850–1939
अनु. अमित सारवाल, रीमा सारवाल, मनीश मोहन गोरे,
सौरभ निरुपम एवं नवनीत कुमार त्रिपाठी

© : डेविड वॉकर

प्रथम संस्करण : 2017

ISBN : 978-81-7844-295-2

मूल्य : ₹ 1495.00

प्रकाशक : **के.के. पब्लिकेशन्स**
4806/24, भरतराम रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
फोन : 011-23285167, 65185557, 64527574
टेलीफैक्स : 011-47340207
ई-मेल : kkpdevinder@vsnl.net
वेब : www.kkpublications.com

आवरण : कुमार कम्प्यूटर, दिल्ली - 33

लेज़र टाईपसैटिंग : कुमार कम्प्यूटर, दिल्ली - 03

मुद्रक : बालाजी ऑफसेट, दिल्ली - 32

Vyakul Rashtra : Australia evam Asia ka Uday, 1850–1939
Trans. Amit Sarwal, Reema Sarwal, Manish Mohan Gore,
Saurabh Nirupam and Navneet Kumar Tripathi

₹ 1495.00

प्राक्कथन एवं आभार

2009 में *व्याकुल राष्ट्र* का भारतीय संस्करण आना एक बड़ी खुशी की बात थी। आस्ट्रेलियाई इतिहास, संस्कृति, साहित्य और कला के लिए भारत में रूचि बढ़ रही है तथा आस्ट्रेलियाई अध्ययन में शोध पत्रों और सहभागियों के दायरे भी बढ़ रहे हैं। यद्यपि कुछ क्षेत्रों में नासमझी और असहमति के कारण दोनों देशों के बीच के आर्थिक बंधन कभी मजबूत नही हो पाए थे। भारतीय विद्यार्थियों पर आस्ट्रेलिया में हुए ताज़ा हमलों की भारत में बहुत भर्त्सना हुई थी। इस दोषारोप की पुनप्रतिष्ठा हुई है कि आस्ट्रेलिया एक नस्ली समाज है। दोनों ही समाजों के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे एक गहरा पारस्परिक जागरूकता विकसित करते है और लाभ का ज्ञान बांटते हैं। हमें एक–दूसरे की ज़रूरत है, *व्याकुल राष्ट्र* मध्य–उन्नीसवीं सदी से द्वितीय विश्व युद्ध के आरंभिक काल तक भारत सहित एशिया में आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधित्व का एक स्पष्ट और विस्तृत इतिहास प्रकट करता है। इस प्रस्तुतीकरण में, यह पुस्तक आस्ट्रेलिया के निर्माण के सम्यक विवरण से भारतीय पाठकों को रू–ब–रू कराती हैं, यह ब्यौरा एशिया के साथ के अटपटे और संवेदनशील रिश्तों से अलग भी बात करता है। *व्याकुल राष्ट्र* पहली बार 1999 में क्वींसलैंड विश्वविद्यालय प्रेस द्वारा प्रकाशित हुई थी। इस सी. एल. एस. श्रृंखला एस. एस. एस. प्रकाशन संस्करण में कोई महत्त्वपुर्ण परिवर्तन नहीं किए गए हैं।

व्याकुल राष्ट्र के पहले प्रकाशन, 1999, पर मुझे अनेक भारतीय विद्वानों की ओर से तीक्ष्ण प्रतिक्रियाएं मिली हैं। मुझे जिन लोगों ने सहयोग दिया है उन सबका उल्लेख करने में मैं असमर्थ हूं, फिर भी मैं दिपेश चक्रवर्ती, आशीश नंदी, आर. नारायण, संतोष के. सरीन, देब नारायण बंदोपाध्याय, नीलांजन देव, याग्मा रेड्डी, दर्वेश गोपाल, देवराम नारखेडे, गीताली देवरी, सरोज रथ, अमित सारवाल और रीमा सारवाल को धन्यवाद देना चाहूंगा। एशिया–पेसिफिक क्षेत्र पर आस्ट्रेलियाई संबंधों के दिलचस्प विषय में डीकिन विश्वविद्यालय आस्ट्रेलियाई और अन्तराष्ट्रीय अध्ययन स्कूल के सहयोगियों के साथ कार्य

करना मेरा सौभाग्य है। स्कूल और डीकिन के बाहर के मेरे सहयोगियों में जोआन बीउमांट, एलन जान्सटन, गेरी स्मिथ, स्टुआन जैकब्स, ली विट ब्राउस, एड ब्रूम्बी, डेविड लोव, मोहन मलिक और इयान वीक्स के उत्साहवर्धन और सुझाव के लिए मैं आभारी हूं। सेंटर फॉर आस्ट्रेलियन स्टडीज के एन्न. चेन्डलर ने अथक सहयोग दिया। 1996 में डीकिन विश्वविद्यालय से मिले अध्ययन अवकाश ने मेरे बाधामुक्त लेखन की शुरूआत करने का सुअवसर दिया।

कोपेनहेगन विश्वविद्यालय के ब्रुस क्लूनिएस और स्टर्लिंग विश्वविद्यालय की एन्जेला स्मिथ ने पुस्तक के कुछ विचार बिन्दुओं पर मेरा ध्यान केन्द्रित किया और यह संभव हुआ उनके प्रयास से मुझे 1995 में कोपेनहेगन में यूरोपियन एसोसिएशन फॉर आस्ट्रेलियन स्टडीज के निमंत्रण पर वहां संबोधित करने के अवसर मिले। इन अवसरों ने मुझमें अमूल्य अनुभव भरे और विशेषकर रूथ ब्राउन तथा टॉम ग्रिफिथ्स से मैं बहुत प्रभावित हुआ।

सिडनी विश्वविद्यालय के रासॅ पेसमैन और रिचर्ड व्हाईट के साथ काम करना मेरे लिए खुशी की बात थी, ये लोग ए.आर.सी द्वारा अनुदानित अध्ययन से आर्दष सहयोगी के रूप में जुड़े हैं और इस अध्ययन के परिणाम स्वरूप *आक्सफोर्ड बुक ऑफ आस्ट्रेलियन ट्रेवल राइटिंग* और *एन एनोटेटेड बिब्लियोग्राफी ऑफ आस्ट्रेलियन ओवरसीज ट्रेवल रांइटिग*, टेरी मैक्कारमैक के साथ जैसी महत्त्वपुर्ण कृतियां सामने आ पाई हैं। इन दोनो परियोजनाओं से एशिया के लिए आस्ट्रेलियाई यात्रियों के बारे में मेरी ज्ञान–वृद्धि हुई है।

एशिया से आस्ट्रेलिया के साहचर्य में मेरी दिलचस्पी इण्डोनेशिया, चीन, और जापान के मेरे सहकर्मियों से विचार–विमर्श से बढी है। इण्डांनेशिया विश्वविद्यालय के वार्डिनिग्सींह सोरजोहार्डजो, रेनी विनाटा और जमीरा लोएबिस के इण्डोनेशिया समाज पर किए गए कार्यों के लिए मैं उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा। याग्जूं विश्वविद्यालय के कर्मचारियों और जियांग्सू आस्ट्रेलियन स्टडीज कंसोर्टियम के सदस्यों के आवाभगत के कारण मैं चीन में अपने आपको हमेशा अपने घर जैसा महसूस करता हूँ। चेन किंग्लीन और किआन फेंग्की जो अभी डीकिन विश्वविद्यालय में शोध छात्र थे, उन्हें मैं विशेष रूप से धन्यवाद देता हूं क्योंकि चीन को समझने में उन्होने मेरी बहुत मदद की है। ये दोनो महत्त्वपूर्ण मित्र हैं। जापान में विशेषकर आस्ट्रेलियाई अध्ययन

की दिशा में मुझे डीकिन विश्वविद्यालय से शिगां विश्वविद्यालय के मजबूत संबंधों से मुझे लाभ मिला। हाजिम हिराय इस कार्यक्रम के मुख्य आधार हैं और वह एक अच्छे मित्र व सहकर्मी भी हैं। चासू एरिमित्सु, दोशिशा विश्वविद्यालय, क्योटो, केज्यू नकामुरा, तेजुकयामा गाकूईन विश्वविद्यालय, ओसाका, और माइकल जैक्यूइस, सोफिया विश्वविद्यालय टोक्यो को भी मैं धन्यवाद देना चाहूँगा क्योकि उन्होने मुझे आमंत्रित कर उनके विद्यार्थियों के साथ आस्ट्रेलिया–जापान के संबंधों पर विचार–विमर्श करने का मौका दिया।

जार्जटाउन विश्वविद्यालय, वाशिंग्टन, डीसी में 1997–1998 तक आस्ट्रेलियाई अध्ययन के लिए एकवर्षीय मोनाशचेयर का दायित्व निर्वहन मुझे दिए जाने पर मोनाश विश्वविद्यालय का आभारी हूँ। योजना के चरण और पूरे वर्ष के दौरान मैं वहाँ रहा, मोनाश विश्वविद्यालय के जॉन नूनान ने मुझे बहुत सहयोग दिया। जार्जटाउन विश्वविद्यालय के आस्ट्रेलियाई और न्यूजीलैंड अध्ययन केंद्र के केथी बर्न्स मेरे अच्छे मित्र बन गए और वाशिंग्टन के लिए कुशल मार्गदर्षक साबित हुए। जॉन नूनान और केथी बर्न्स द्वारा किए गए सहयोग के लिए मैं सदा ऋणी रहूँगा। जब मैं इस प्रभावशाली संस्थान में सुव्यवस्थित हो गया तो फ़ादर जेफ वानॅ आर्क्स ने भी मेरा समुचित मार्गदर्शन किया।

जार्जटाउन विश्वविद्यालय, में प्रवास के दौरान मैंने एशिया के प्रति आस्ट्रेलियाई दृष्टिकोण विषयक एक नया पाठ्यक्रम शुरू किया। इस पाठ्यक्रम में 303–01 विद्यार्थियों ने अध्ययन किए और इससे मुझे पुस्तक के कुछ प्रमुख विषयवस्तु पर गहन चिन्तन की दिशा मिली। कांग्रेस लाइब्रेरी, वांशिगटन के जेफरससन रीडिंग रूम ने मुझे अध्ययन से जुड़े अपार संसाधन उपलब्ध कराए। कांग्रेस लाइब्रेरी और लैब्रिंथिन नेशनल आर्काइन्स, कॉलेज पार्क, मेरीलैण्ड इन दोनों ही स्थानों पर पैट्रिसिया मैक्कलास्के ने अपना कुशल शोध सहयोग प्रदान किया।

मेरे सहकर्मी स्टीफेन गार्टन और जूलिया हार्न सर्वश्रेष्ठ मित्र साबित हुए तथा आस्ट्रेलिया के इतिहास के बारे में उनका ज्ञान और प्रोत्साहन अमूल्य है। हमारी सुखद मुलाकात ओकटन, उत्तरी वर्जीनिया में हुई थी, जब वे प्रगति पर चल रहे एक कार्य की पूरी समीक्षा कर पाने में असमर्थ हो गए थे। डेविड रीवे नामक एक अन्य व्यक्ति जो ओकटन भ्रमण पर आए थे, मेरे अच्छे मित्र बन गए और उन्होंने मेरी शुरूआती पांडुलिपि के लिए बहुमूल्य सुझाव दिए तथा पांडुलिपि रचना में गहरी रूचि दिखाया।

जॉन लेगी, ग्रीम और रीनेट ओसबर्न, हैंक नेल्सन, इयान बिकर्टन, नान एलनिस्की, रोडनी मेस, जीनेट हूर्न, रिचर्ड नाइल, डेविड गूडमैन, सेलिना सैमुएल्स, मिवाको नाकामुरा और रिचर्ड चौवेल ने अनेक प्रकार से मेरी सोच को स्पष्ट किया तथा उपयोगी स्रोतों से मुझे अवगत कराया। वाइने हडसन ने आस्ट्रेलिया की रचना विषय पर एक अध्याय को लिखने के लिए मुझे तैयार किया जो इस पुस्तक की भूमिका का आधार बना। आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय पुस्तकालय के पांडुलिपि पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रीम पोवेल और मिशेल पुस्तकालय, सिडनी के जिम एंड्रीघेट्टी ये दोनों समय के बेहद पाबंद साबित हुए और इन्होंने मेरे पास मौजूद पांडुलिपियों के प्रति मुझे सजग भी किया।

जूलिएट पीयर्स इस जोखिम भरे प्रयास के लिए सजग सलाहकार रहे। आस्ट्रेलियाई कला के इतिहास की उनकी समझ प्रभावशाली और विचारोतेजक है।

सिडनी में जेनेविवे बर्नेट से सर्वाधिक बोध सहयोग प्राप्त हुआ। उनके सहयोग के बिना यह पुस्तक पूरी नहीं हो सकती थी। उनके मन में उठने वाली अनेक अनुसंधानपरक शंकाओं को उन्होने अपने विवेक और बुद्धि से दूर किया। मैं उनसे और अधिक कह–सुन नहीं सकता था।

मैं अपने पिता जानॅ एडी के प्रति विशेष आभारी हूं जिन्होंने जार्जटाउन में मेरे द्वारा बिताए गए एक वर्ष को मूर्तरूप देने के लिए बहुत कुछ किया। आस्ट्रेलियाई एवं न्यूजीलैण्ड अध्ययन केंद्र के निदेशक पद के दायित्व निर्वहन के साथ–साथ उन्होने 1998 के वंसत सत्र में मेरी पांडुलिपि के प्रारूप को पढा और वाकायदा अपने मत भी दिए। उनकी इस सदस्यता से मैं बेहद प्रभावित हुआ और उनके ज्ञान तथा संपादकीय अनुभव से मैं लाभांवित हुआ।

यह भी मेरे लिए सौभाग्य की बात थी कि मेरी पांडुलिपि का पुनर्मूल्यांकन 1998–99 में हेजेल रोव्ले ने किया। उनके संपादकीय सुझावो ने गद्य को सुगठित किया और पुस्तक में किए गए विमर्शों को स्पष्ट बनाया। इस कार्य में दिए गए उनके समय, बुद्धि और हल्के विनोदपूर्ण क्षणो के लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

इस पुस्तक के अंतिम मसौदे को लिखने में सहयोग के लिए मैं अपनी पत्नी करेन का बेहद आभारी हूँ। पुस्तक के स्वरूप के संबंध में हर एक अध्याय पर उन्होने मुझे सहयोग दिए और फुटनोट को सुव्यवस्थित करने में वह विशेष

सहयोगी रही। उनके पैने सुझावों, व्यावहारिक सहयोग, प्रोत्साहन और साथ मेरे लिए बहुत काम आए।

मेरे इस पूरे प्रयास के दौरान मेरी बेटियों जारा और वेरोनिका ने धैर्य सभ्यता का परिचय दिया। उनके साथ बिताए हंसी खुशी के क्षणों ने मुझे बहुत राहत दिया और कंप्यूटर स्क्रीन से बाहर की दुनिया के प्रति मुझे सजग बनाए रखा। यद्यपि मैंने यह सोच रखा था कि मेरे पिता लंबी प्रतीक्षा के लिए तैयार थे, मगर उनकी नब्बे वर्ष की आयु में इस पुस्तक के पूरा होने पर उन्हें प्रसन्नता हुई।

अंत में सुख दुःख के बीच, श्रीमति टी. बार्कर और उनके बेटे ई. एल. एफ. बार्कर ने अपने समक्ष प्रस्तुत विभिन्न चर्चाओं कों ध्यानपूर्वक सुना।

व्याकुल राष्ट्र पुस्तक एयर मार्शल के. सी. नंदा करिप्पा और उनकी पत्नी, मीना को समर्पित है। नंदा के पिता के कैरियर पर शोध के दौरान इनसे मेरी पहचान हुई। नंदा के पिता फील्ड मार्शल के एम करिप्पा आस्ट्रेलिया में 1950 के दशक के मध्य में भारत के उच्चायुक्त थे। नंदा और मीना ने कूर्ग के रोशनआरा में मेरी पत्नी, करन और मुझे बेहद सहयोग तथा आतिथ्य दिया है।

हिन्दी विश्व में सबसे ज्यादा बोले जानी वाली भाषाओं में से एक है। मुझे बेहद खुशी है कि मेरी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद आस्ट्रेलिया एवं भारत के संबंधों को समझने में शिक्षकों एवं छात्रों की सहायता करेगा। इस पुस्तक के अनुवादकों अमित सारवाल, रीमा सारवाल, मनीष मोहन गोरे, सौरभ निरुपम, एवं नवनीत कुमार त्रिपाठी का मेरा हार्दिक धन्यवाद।

–डेविड वॉकर
डीकिन विश्वविद्यालय,
मेलबर्न, 2016

व्याकुल राष्ट्र की प्रशंसा में

एशिया के आस्ट्रेलियाई प्रतिनिधित्व पर *व्याकुल राष्ट्र* से बेहतर कोई अन्य इतना शोधपरक मूल्यांकन उपलब्ध नहीं है। एशिया के छोर पर टिके हुए उपनिवेशी समाज पर केन्द्रित इस विद्वतापूर्ण और विवेक पूर्ण पुस्तक को ऐसी स्थिति में पढ़ना और भी जरूरी हो जाता है। जब भारत आस्ट्रेलिया के लिए एक ग्रंथि पाले हुए है कि वह एशिया के प्रति अक्सर चिन्ता जनक प्रतिक्रिया देता है।

– दीपेश चक्रवर्ती, इतिहास और दक्षिण एशियाई अध्ययन के लारेंस ए किपटन डिसटिंग्विस्ड सर्विस प्रोफेसर, शिकागो विश्वविद्यालय

"व्याकुल राष्ट्र एशिया के प्रति आस्ट्रेलिया की एक संवेदनशील द्रुव वैचारिक प्रतिक्रिया है और इसमें आस्ट्रेलिया की स्व परिभाषा करने में तथा औपनिवेशिक विरासत को उकेरने में भारत की भूमिका का ब्यौरा दिया गया है। आस्ट्रेलिया भारत को जिस रूप मे देखता है भारत के प्रति अंतदृष्टि से परस्पर भिन्न है परन्तु इसने आस्ट्रेलिया के लिए विशेष स्वरूप निर्धारण किया है।"

– आशीष नंदी, वरिष्ठ मानद सलाहकार, सेंटर फॉर दि स्टडी आफॅ डेवेलपिंग सोसायटी, नई दिल्ली

2001 के अर्नेस्ट स्काटॅ पुरस्कार का उद्धरण

"व्याकुल राष्ट्र खूबसूरती से किया गया एक नियंत्रित कार्य है। सह प्रभावशाली और विद्वतापूर्ण भी है। इसका रचना में साहित्य और दृश्य कला से लेकर व्यापार और राजनय के असाधारण प्रमाण सम्मिलित किए गए है। नस्ल के प्रति एक संतुलित दृष्टिकोण के कारण यह कृति विशेष रूप से असरदार हो गई है। यह इसलिए पूर्वी एवं दक्षिणी एशिया के साथ आस्ट्रेलिया के दीर्घ संबंधों तथा नस्लवाद और इसके अतीत व वर्तमान की हमारी समझ को बेहद परिपक्व बनाती है।"

–इतिहास के लिए

"एशिया की बहुलताजनित ऐतिहासिक विमर्श को केंद्र में रखते हुए वॉकर ने उनसे हमारे संबंधों पर एक गभीर चर्चा को समग्रता में दुनिया के सामने रखा है।"

–यूरेका स्ट्रीट

"यह पुस्तक उन दुर्लभ अकादमिक उत्पादों में से एक है समावेशी शैली में बौद्धिक चुनौती और उत्कृष्ट शोध के संयोग को फलीभूत करती है। वॉकर ने आस्ट्रेलिया के विकसित हो रहे सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण को एशिया के उद्‌भव के अनेक परतों से जोड़कर देखा है।"

–एशियन स्टडीज रिव्यु

"यधपि *व्याकुल राष्ट्र* 1850 से 1939 तक की अवधि के एशिया के प्रति आस्ट्रेलियाई अनुभूति को प्रकट करती है और इस मूद्दे को यह पुस्तक अग्रेजीं बोलने वाले देषों के व्यापक बौद्धिक दायरे में रखता है। एशिया के साथ अतीत और वर्तमान से जुडे लोग और वे जो इन देषों में एशियाई अध्ययन का शिक्षण कार्य करते हैं वे खासकर इस पुस्तक को स्रोत विमर्श और तुलनात्मक उद्‌देश्यों के कारण रूचिकर पाएगें।"

–दी जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज

"उस हर व्यक्ति को डेविड वॉकर की यह पुस्तक पढ़नी चाहिए जो एशिया के साथ आस्ट्रेलिया के रिष्तों पर टिप्पणी का अवलोकन करते है या जो आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय अनुभव को समझना चाहते हैं।"

–दी इंटरनेशनल हिस्ट्री रिव्यु

"*व्याकुल राष्ट्र* आस्ट्रेलियाई अध्ययन और एशिया के मध्य सवांद का एक विस्तृत तथा रोचक संयोग हैं। यह एक ऐसे प्रवेश द्वार के समान है जिसके अंदर आस्ट्रेलिया और एशिया के संवाद सांस्कृति प्रभावों सहित अनेक अन्य पहलुओं पर चर्चा की गई है।"

–दि एज

"प्रोफेसर वॉकर की यह समृद्व कृति उनके अनेक वर्षों शोध विचार और अनुभवों का परिणाम है। धाराप्रवाह शैली में लिखे गए गध *व्याकुल राष्ट्र* में आस्ट्रेलिया और एशिया के मध्य पुराकाल से लेकर आधुनिक समय तक की संधियों और संबंधों का वर्णन है। इसमें प्रशांत की नागरिकता से लेकर लोकप्रिय हो चली दुर्बोध जापानी कला और भारतीय उपमहाद्वीप की आध्यात्मिकता का जिक्र हैं।"

–रिचर्ड नाईल, निदेशक, इंस्टीटयूट फॉर मीडिया, क्रिएटिव आर्ट्स एडं इंफार्मेशन टेक्नोलॉजी, मूरडोक विश्वविद्यालय

"क्या आस्ट्रेलिया के भाग्य में यूरोपीय एशियाई आदिम होना लिखा था? इस परिप्रेक्ष्य में यह पुस्तक व्यक्तिगत और राजनैतिक सांमजस्य को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है आस्ट्रेलिया के अपने क्षेत्र के व्यापक संदर्भ में देंशिक और नस्लीय संवेदनाओं पर भी यह एक दृष्टिपात करती है। इतिहास विज्ञान और साहित्य के संदर्भ में वाकॅर ने आस्ट्रेलिया के एशिया के साथ यथार्थ और काल्पनिक द्वंद्व को भी दर्शाया है। जनसख्या पर्यावरणीय सीमाओं बहुसंस्कृतिवाद् और आस्ट्रेलियाई समझौते की वैधता पर चल रही मौजूदा बहस पर एक गंभीर दृष्टिकोण उन्होनें रखा है। यह विचारों और दुरभिसंधियों के एक खोजी इतिहास के रूप में है जो रक्त गर्मी सूर्य संवेदना सेक्स और सपनों के राजनैतिक व साहित्यिक आयामों को रेखांकित करता है। अत्यधिक भय और कल्पनाओं की समीक्षा इसमें संवेदनशीलता और नम्र वाक्पटुता के साथ की गई है।"

–टॉम ग्रिफिथ्स, इतिहास कार्यक्रम, रिसर्च स्कूल ऑफ सोशल साइसेंज, आस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय

"डेविड वाकॅर का *व्याकुल राष्ट्र* वर्षों लम्बे शोध और सूक्ष्म अवलोकनों का प्रतिफल है। एशिया के प्रति आस्ट्रेलिया के आकर्षक उलझण और अन्तर्निभरता को उन्होने इस पुस्तक में बहुत बुद्धिमानी सांमजस्य पूर्ण ढंग से प्रगट किया हैं। यह महत्वपूर्ण पुस्तक न सिर्फ सामायिक है बल्कि विनोदपूर्ण और विवेकशील है।"

–जानॅ जे. एडडी, एस. जे., प्रमुख, आस्ट्रेलियन इंस्टीट्यूट ऑफ जेसूट स्टडीज

"यह पुस्तक आस्ट्रेलिया और एशिया के बीच संबंधों को परिपूर्णता के साथ प्रस्तुत करने वाला एक संयमित वृतांत हैं। यह कृति सामसयिक अपने में रमाने वाली और बेहद अनुशंसा के काबिल है।"

–हेजेल रोव्ले, लेखक और जीवनीकार

अनुक्रम

अध्याय	शीर्षक	पृष्ठ
	प्राक्कथन एवं आभार	*v*
	व्याकुल राष्ट्र की प्रशंसा में	*xi*
	2001 के अर्नेस्ट स्कॉट पुरस्कार का उद्धरण	*xi*
	प्लेट, रेखाचित्र एवं तालिका की सूची	*xvii*
1	**भूमिका**	**1**
2	**पुराकालीन पूरब**	**19**
3	**वंश, प्रजाति और ब्रिटिश राज**	**37**
4	**सौ सुनार की और एक लौहार की**	**53**
5	**जादुई टापू**	**77**
6	**पूर्व के साथ व्यापार**	**105**
7	**प्रशांत के परिदर्शक**	**127**
8	**आक्रमण वृतांत**	**149**
9	**रिक्त उत्तर सावधान रहना**	**173**
10	**कमल और ड्रैगन्स**	**195**
11	**गर्म प्रदेश**	**219**
12	**खाली महाद्वीप**	**239**
13	**शैतान डॉक्टर**	**259**
14	**रक्तरंजित कहानियां**	**277**
15	**मुरब्बे के लिए मुद्रा**	**297**
16	**प्रशांत के नागरिक**	**321**
17	**निष्कर्ष**	**345**
18	**टिप्पणियाँ**	**355**
	अध्याय एक	*355*
	अध्याय दो	*357*
	अध्याय तीन	*360*

अध्याय चार 363
अध्याय पाँच 367
अध्याय छः 372
अध्याय सात 376
अध्याय आठ 379
अध्याय नौ 384
अध्याय दस 388
अध्याय ग्यारह 393
अध्याय बारह 398
अध्याय तेरह 403
अध्याय चौदह 406
अध्याय पन्द्रह 411
अध्याय सोलह 415
अध्याय सत्रह 422

19 **संदर्भ-ग्रंथ सूची** 423
1939 से पूर्व प्रकाशित पुस्तकें 423
1939 के पश्चात् प्रकाशित पुस्तकें 431
1939 से पूर्व प्रकाशित आलेख तथा पुस्तकों के अध्याय 440
1939 के बाद प्रकाशित पुस्तकों के आलेख तथा अध्याय 449
हस्तलेख तथा प्राचीन संग्रह 454
शोध-पत्र 456
फिल्में 457
इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस 457

प्लेट, रेखाचित्र एवं तालिका सूची

प्लेट	शीर्षक	पृष्ठ
प्लेट 1	'पीपल ओर पेरिश', *मिलियन्स मैगजीन*, 15 अक्टूबर 1923. मिट्चेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय।	12
प्लेट 2	जेम्स 'राजा' इंग्लिश, चाय व्यापारी एवं राजनीतिज्ञ। जेम्स इंग्लिश का एक उदाहरण, 1888 में सिडनी और ब्रिस्बेन में प्रकाशित, *टेनट लाइफ इन टाइगर लैण्ड*। स्टेट रेफेरेन्स पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय।	23
प्लेट 3	जेम्स हिंग्सटन के मेलबर्न सम्पादन, *दी आस्ट्रेलियन एब्रोड ओन ब्रान्चेज फ्रोम दी मैन रूट्स राउड दी वर्ल्ड*, 1885, का मुख्य आवरण। मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय।	26
प्लेट 4	1903 में दिल्ली दरबार में, वायसराय लार्ड कर्जन को अपने घोड़ों की साज पर खड़े होकर सलामी देते हुए किशनगढ़ के घुड़सवार, *सिडनी मेल*, 13 दिसम्बर 1911। स्टेट रेफेरेन्स पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय।	44
प्लेट 5	औपचारिक भारत ने आस्ट्रेलिया के प्रेस में नियमित उपस्थिति दर्ज की। यहाँ राजा बम्बई में एक सम्बोधन का उत्तर दे रहे हैं, *टाउन एण्ड कंट्री जर्नल*, 31 जनवरी 1912. स्टेट रेफेरेन्स पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय।	49
प्लेट 6	1875 में क्वींसलैण्ड में कुकटाउन में चीनियों का आगमन। मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय।	55
प्लेट 7	फान–टान में खेलते हुए चीनी जुआरी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में प्रेस में चीनियों के बीच जुआ खेलने को लेकर महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ हुईं। *टाउन एण्ड कंट्री जर्नल*, 30 अप्रैल 1881. स्टेट रेफेरेन्स पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय।	64

प्लेट 8 थामस मैकिल रेथ, क्वींसलैण्ड का राजनेता जापान की अपनी यात्रा पर स्थानीय औरतों के साथ विहार करते हुए। वे औरतें जिनके राष्ट्रीय चरित्र, अपेक्षाकृत अनिश्चित रूप से स्थापित हैं, सामान्य रूप से स्त्री जाति के छल–कपटों को प्रदर्शित कर रहीं हैं जो पूर्वी क्षेत्र के औरतों की विशेषता प्रकट करती थीं। आवरण, *बूमरंग*, 29 दिसम्बर 1888. स्टेट रेफेरेन्स पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **81**

प्लेट 9 जेम्स मर्डोक के जापानी कलाकृतियों के संग्रह की ब्रिस्वेन में निलामी के लिए विज्ञापन। निलामी से ज्ञात होता है कि जापानी कलाओं एवं उद्योग–धंधें के लिए एक व्यापक माँग होती थी, यद्यपि 600 टहलने वाली घड़ियों को स्थानीय बाजार को संतुष्ट करने में एक लम्बा समय अवष्य लग गया होगा। *बूमरंग*, 11 मई 1889. स्टेट रेफेरेन्स पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **96**

प्लेट 10 एक जापानी परिधान को पहने हुए, आस्ट्रेलिया बैंक के प्रबंधक मार्टिन पेट्रि ब्लंडेक की सत्रह वार्षिय पुत्री सोफिया ब्लण्डेल। फोटोग्राफ को 1898 में, चास्टरलीटन एवेन्यू टूरक मेलबर्न में, सोफिया के पारिवारिक घर 'चास्टलीटन' में बड़ी बहन द्वारा लिया गया। जापानी स्क्रीन एवं आस–पास के सजावट 1890 के समृद्ध आंग्ल–आस्ट्रेलिया के परिवारों में जापानी चीजों के आकर्षण को व्यक्त करते है। रोडनी कुमिन्स का फोटोग्राफ अनुग्रह। **98**

प्लेट 11 आस्ट्रेलियन उपनिवेशों की अपनी यात्रा पर, प्रसिद्ध ब्रिटिश युद्ध संपादक फ्रेड्रिक विलिअर्स। विलिअर्स ने बाद में रूस–जापानी युद्ध पर कई लेख भी लिखे। *सिडनी मेल*, 18 मई 1895. स्टेट रेफेरेन्स पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **111**

प्लेट 12 अपने विशेष मुद्रा में नौसेनाध्यक्ष सीमापुरा, जापानी प्रशिक्षण जहाजी बेड़ा के कमांडर 1903 आस्ट्रेलियन प्रेस में प्रकाशित जापानी अधिकारियों के फोटोग्राफ्स के साथ जापानियों के बारे में *बुलेटिन* के अपमानजनक टिप्पणियों से समझौता करना कठिन है। शायद यही कारण था कि *दी बुलेटिन* ने 1903 और 1906 के जहाजी बेड़ों के दौरान जापानियों की कोई तस्वीर प्रकाशित नहीं की। *आस्ट्रोलश्यिन*, 19 मई 1906. आस्ट्रेलिया का राष्ट्रीय पुस्तकालय। **131**

प्लेट 13 कैमरे से फोटो के लिए ग्रोट वाइट फलीट के अमेरिकन नाविक एक भालू से मल्लयुद्ध करते हुए। यह उन साधारण रूप से प्रकाशित जापानियों के दिखाए हुए चित्रों से अपेक्षाकृत एक खिलवाड़ी छवि है। बेचारा भालू एक शिपबोर्ड दुर्घटना में बहुत जल्द ही मर गया। *टाउन एण्ड कंट्री जर्नल*, 19 अगस्त 1908. स्टेट रेफेरेन्स पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **145**

प्लेट 14 आस्ट्रेलिया की जनता के मन में एक धारणा बैठाने के लिए एशियाई आक्रमण की एक कहानी को लिए, मार्डियल्लिआक के युद्ध का मुख्य आवरण। मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **160**

प्लेट 15 न्यू साउथ वेल्स बुकस्टाल कम्पनी द्वारा प्रकाशित एक आक्रमण उपन्यास 'राटा' (टी. आर. रायड हाउस) द्वारा, *दी कलर्ड कौनक्वेस्ट*, का मुख्य आवरण। 1893 से 1913 तक रायडहाउस एक सिडनी समाचार पत्र *दी संडे टाइम्स* के सम्पादक थे तथा बाद में मेलबर्न *आर्गस* के लिए सिडनी सम्पादक हो गये। मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **169**

प्लेट 16 अल्फ विनसेट का 'दी थिन व्हाइट लाइन; ऑर ओवर नार्दर्न कोस्ट डिफेंस', एशिया के अपराजयता एवं निकटता पर *बुलेटिन* की एक विशेष टिप्पणी है। *बुलेटिन*, 18 जुलाई 1907. आस्ट्रेलिया का राष्ट्रीय पुस्तकालय। **191**

प्लेट 17 जापानी प्रशिक्षण जहाजी बेड़ों के लिए एक आकर्षक गवर्नमेंट हाउस स्वागत पर कलाकार फ्रेड लाइस्ट का प्रभाव। *सिडनी मेल*, 17 जून 1903. आस्ट्रेलिया का राष्ट्रीय पुस्तकालय। **199**

प्लेट 18 प्रथम विश्व युद्ध के दौरान सिडनी की औरतों के साथ जापानी अधिकारियों का एक फोटोग्राफ। इस प्रकार के दृश्यों ने *बुलेटिन* और *ट्रुथ* में टिप्पणीयों को प्रज्जवलित करने में घी का काम किया। मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **202**

प्लेट 19 एक उपयुक्त रूप से अमंगलीय दिखाई पड़ने वाली चीन की बेवा साम्राज्ञी का रेखाचित्र। *रिव्यु आफ रिव्युस*, 15 अगस्त 1900, मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **213**

प्लेट 20 त्वचा के रंग एवं जलवायु के बीच सम्बन्ध पर अपनी समझ को दर्शाने वाला इ. डब्ल्यू कोल का संसार का नक्शा। इ. डब्ल्यू कोल, *ऐ व्हाइट आस्ट्रेलिया इमपासिबुल*, तीसरा संस्करण, मेलबर्न, कोई तारीख नहीं। मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **229**

प्लेट 21 महाद्वीप के विशाल क्षेत्रों को खेती के लिए बंजर या अनुपयुक्त दर्शाने वाला ग्रिफिथ टेयलर के बहुत से नक्षों में से एक नक्शा। 'बंजर' और 'बेकार' भूमि के विषाल फैलावों को दर्शाने वाले टेयलर के नक्शों ने 1920 में समाचार पत्रों में तीक्ष्ण लम्बी बहस को उत्पन्न कर दिया। *फारेन अफेयर्स*, जुलाई 1927. स्टेट रेफेरेन्स पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **242**

प्लेट 22 यूरोप के देशों के साथ आस्ट्रेलिया का नक्शा अधिनिर्दिष्ट। प्रारंभिक बीसवीं शताब्दी में यह एक साधारण आधार मूल तत्त्व है और उपनिवेश के लिए आस्ट्रेलिया का खालीपन और सममाव्यता पर ज़ोर देने के प्रयोग किया जाता था। आवरण, *मिलियन्स मैगजीन*, 1 जुलाई 1921. मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **249**

प्लेट 23 सिडनी ट्रिवोलि में अंग्रेज अभिनेता ब्रान्सबाई विलियम्स डा. फु मान्चु का अभिनय करते हुए। विलियम्स के चरित्र नाट्य संग्रह में सम्मिलित होना यह दर्शाता है कि यह दुष्ट चीनी डॉक्टर 1920 के पूर्वार्द्ध तक आस्ट्रेलियाई दर्शकों द्वारा अच्छी तरह से जाना पहचाना जा चुका था। *पैसिफिक*, 7 अगस्त 1924. मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **273**

प्लेट 24 'विल समबड़ी टेल हिम?', कार्टून जो प्रोफेसर ग्रिफिथ टेलर के उपर एक व्यंग्य है। टेयलर ने सुझाव दिया था कि आस्ट्रेलियाई चीनियों के साथ अन्तर्विवाह से लाभ उठा सकते है। *डेली टेलिग्राफ*, 25 जुन 1923. स्टेट रेफेरेन्स पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **295**

प्लेट 25 नीदरलैण्ड्स इस्ट इण्डिज में वोंम्बैट बूट पालिश के लिए विज्ञापन *इण्टर–ओषियन*, जनवरी 1924. मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **307**

प्लेट 26 चीन के साथ व्यापार के वाणिज्यिक संभावना को दर्शाता हुआ, शंघाई में एक प्रभावकारी चीनी डिपार्टमेंट स्टोर का रेखाचित्र। *मिलियन्स मैगजीन*, 1 नवम्बर 1919. मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **309**

प्लेट 27 एशिया में कॉमनवेल्थ बैंक के लिए विज्ञापन। *इण्टर–ओशियन*, जनवरी 1924. मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **310**

प्लेट 28 अन्तर्युद्ध वर्षों में प्रशांत पर प्रकाशनों की बढ़ती हुई संख्या में कुछ खर्चीले प्रस्तुत समाचार–पत्र भी सम्मिलित थे। आवरण, *जावा गजेट*, जुलाई 1972. मिटचेल पुस्तकालय, न्यू साउथ वेल्स राज्य पुस्तकालय। **326**

रेखाचित्र 5.1 जापान पर प्रकाषन, फ्रांस के बारे में प्रकाषन के प्रतिषत के रूप में प्रस्तुत, 1850–1910, जैसा कि अमेरिकी पुस्तकालय कांग्रेस में सूचीबद्ध है। **79**

रेखाचित्र 6.1 आस्ट्रेलिया से पूर्वी एशिया और दक्षिण–पूर्वी एशिया के निर्यात, 1890–1910. स्रोत – *सैन्डरा टविडी, ट्रेडिंग पाट्र्नस् – आस्ट्रेलिया एण्ड एशिया 1790–1993*, पृष्ठ 224–25. ..... **121**

रेखाचित्र 6.2 पूर्वी और दक्षिण–पूर्वी एशिया के कुल व्यापार प्रतिशत के रूप में आस्ट्रेलिया से एशियाई देशों के निर्यात, 1910. स्रोत – *सैन्डरा टविडी, ट्रेडिंग पाट्र्नस् – आस्ट्रेलिया एण्ड एशिया 1790–1993*, पृष्ठ 224–25. ..... **121**

रेखाचित्र 9.1 दक्षिणी आस्ट्रेलिया जनगणना 1871–1901 तथा कॉमनवेल्थ जनगणना 1911–1920 में आँकड़ों के अनुसार संपूर्ण जनसंख्या में परिवर्तन एवं 1871–1920 उत्तरी क्षेत्र के चीनियों की जनसंख्या। **177**

रेखाचित्र 15.1 वित्तीय वर्ष 1931–32 से 1939–40 तक जापान को आस्ट्रेलियन ऊन निर्यात। आँकड़ो का स्रोत – सेन्ड्रा ट्वीडी, *ट्रेडिंग पार्टनर्स, आस्ट्रेलिया एण्ड एशिया 1790–1993*, (सिडनी, 1994), पृ. 241. ..... **318**

रेखाचित्र 16.1 1 से 100 के मान पर 1890 व 1922 के मध्य में जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका की सापेक्षिक शक्ति व प्रभाव। नकोलस रूजवेल्ट की रचना *दी रेस्टलेस पैसिफिक* से साभार।..... **323**

रेखाचित्र 16.2 1 से 100 के मान पर 1890 से 1921 के मध्य ब्रिटेन व रूस की सापेक्षिक शक्ति। निकोलस रूजवेल्ट की पुस्तक *दी रेस्प्लेस पैसिफिक* से साभार।..... **323**

रेखाचित्र 16.3 1850–1939 के वर्षों में लाईब्रेरी ऑफ कॉग्रेंस, वॉशिंगटन डी. सी., में प्रशांत क्षेत्र पर केन्द्रित सूचीबद्ध प्रकाशन।..... **327**

तालिका 1 आई. पी. आर. सम्मेलन 1925–1939 के आस्ट्रेलियाई प्रतिनिधि।..... **334**

अध्याय एक

भूमिका

एशिया के प्रति हमारी निकटता की समय–समय पर पुनर्खोज आस्ट्रेलियाई इतिहास के उल्लेखनीय तत्वों में से एक है। इस तथ्य को यूरोपीय स्थिरीकरण की शुरूआत से चिंहित करना संभव होगा, परंतु यह पुस्तक 1850 से एशिया के उदय और तदंतर एशियाई राष्ट्रों के विश्व के सशक्त राष्ट्रो बनने के पीछे नाटकीय बदलावों की चर्चा करती है। पहले 1857–1858 में भारत में ब्रिटिश हुकूमत की जड़ें 'सिपोय उपरिसिंग्स' से हिली, इसे आम भाषा में भारतीय नाफरमानी कहा जाता है। साम्राज्यवादी ताकतों ने युवाओं को इस क्रान्ति के हिंसक दमन के बाद रोका। समकालीन आस्ट्रेलियावासियों के अनुसार कानपुर, लखनऊ, और अन्य क्रान्ति स्थल वीरतापूर्ण कार्यों के पर्याय बन गए थे, जबकि ब्रिटिश हुकूमत के साहस की कहानियाँ एक विरोधाभास प्रकट करती है, जिनमें यह प्रकट होता है कि भारत के मूल निवासियों में निष्ठाहीनता और कृतघ्नता थी। ब्रिटिश राज के प्रतिरोध सशक्त उदाहरणों में भी भारतीय राष्ट्रवादियो के लिए इसी तरह की बातें कही गई हैं। उन्नीसवीं सदी के ब्रिटिश साम्राज्यवाद दुनिया का यह केन्द्रीय विचार बन गया कि भारत ने ब्रितानी चरित्र को सर्वश्रेष्ठ तरीके से ग्रहण किया। ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ उठी भारतीयों की आावाज़ को कम महत्त्व दिया जाता था।

1870 के दशक के आस्ट्रेलिया में अल्फ्रेड डीकिन – जो बाद के वर्षो में तीन बार वहाँ के प्रधानमंत्री बने – अपने विकास के दिनो में एक शिक्षित व्यक्ति के समान भारत को जानने लगे थे। धर्म को लेकर उन्नीसवीं सदी की सोच के अनुसार आर्य सभ्यता के विकास के साथ अनेक मान्यताएं भारत में आई और ब्रिटिश राज की उपलब्धियों के बदौलत भारत ज्ञान का केन्द्र बना। डीकिन ने स्वयं यह स्वीकारा है कि वह अपने युवावस्था में पतन होते विश्व की पुरातनता के बीच अकेले भारत देश को ऐसा समझते थे कि जो उनके मन में उठी कल्पनाओं को एक नया दृष्टिकोण देता था। 1893 में भारत पर केन्द्रित डीकिन द्वारा लिखी दो पुस्तकों को पढ़कर प्रथमदृष्ट्या पाठक का उन्हें पूर्व का नुमाइंदा